संपादकीय

हमारा बौद्धिक दायित्व है कि हम देश के विभिन्न प्रांतों एवं उनमें बोली जाने वाली भाषाओं और मान्यताओं में निहित भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एकता के मूल्यों से संवाद करें, जो भारतभाव के हेतु हैं। इस उद्देश्य से भक्ति आंदोलन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है क्योंकि भक्ति आंदोलन एक अखिल भारतीय स्वरूप ग्रहण करता है, जिसमें देश में पहली बार प्रांत भेद, जाति भेद, भाषा भेद, संप्रदाय भेद आदि से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता, बंधुत्व और मानवता की बात की गई है। सभी संतों और भक्तों के चिंतन में अखंड भारत की सोच है, सांस्कृतिक एकता की भावना है। आज हम पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चतुर्दिक भारत भाव को जीते हैं तो वह संतों और भक्तों का योगदान है।

भारतीय दार्शनिक बोध में जीवन एक यात्रा है। हमारे दार्शनिक मूल्य जीवन को यात्रा के रूप में मानते हैं। भारतीय ज्ञान की वाचिक परंपरा यात्रा संस्कार से पुष्ट होती है। यही कारण है कि भक्तिकालीन संतों एवं भक्तों में यात्रा संस्कार का एक सर्वमान्य तत्व मिलेगा। श्रीमंत शंकरदेव जी प्रमाण हैं। यह अंक श्रीमंत शंकरदेव पर केंद्रित है। श्रीमंत शंकरदेव का भाव बोध और भाषा बोध दोनों ही यात्राबोध से निर्मित है। उनकी भक्ति भावना का केंद्र भगवान कृष्ण ही हैं, यद्यपि उन्होंने, भगवान राम को लेकर भी नाटक लिखे हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में संपूर्ण भारत का भ्रमण किया था। इसके द्वारा उन्होंने संपूर्ण भारत को जोड़ने का प्रयास किया।

पन्द्रहवीं शताब्दी के ये महान संत असम सहित संपूर्ण पूर्वोत्तर के समाज, साहित्य और जीवन बोध के केंद्र में हैं। श्रीमंत शंकरदेव की रचनात्मकता ब्रजभाषा के राष्ट्रीय स्वरूप का प्रमाण हैं। प्राग्ज्योतिषपुर में वैष्णव आंदोलन ब्रजबुलि में संभव होता है। ब्रजबुलि ब्रजभाषा, असमिया, मैथिली, संस्कृत और बांग्ला का सम्मिलित रूप है। असमिया के मध्यकालीन साहित्य के मर्मज्ञ कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' जी ब्रजबुली को शौरसेनी से ही विकसित मानते हैं। इसी अर्थ में यह हिंदी का एक रूप ठहरती है। भारतवर्ष श्रीमंत शंकरदेव जी की रचनाधर्मिता के केंद्र में है। यही वह बिंदु है, जहाँ से मैं प्राग्ज्योतिषपुर और हिंदी के रिश्तों को समझता हूँ। आपको ज्ञात है कि हमारे सांस्कृतिक जीवन का प्राग्ज्योतिषपुर विश्वविद्यालयों के जीवन में उपेक्षित ही रहा, किन्तु विश्वविद्यालय विश्व नहीं है।

श्रीमंत शंकरदेव जी ने भारतभूमि को जम्बूद्वीप, मध्यत भारत श्रेष्ठतर कहा है, यानी जम्बूद्वीप में भारतभूमि श्रेष्ठहै। यह श्रेष्ठता का बोध जिस भाषा संस्कार से बनता है- भक्ति उसी का प्रतिनिधित्व करती है। श्रीमंत शंकरदेव के आराध्य यूँ तो लीला स्वरुप कृष्ण हैं, किंतु वे राम विजय नाटक भी लिखते हैं। 'कीर्तनघोषा' में उनका पद है-

"गुण नाम जत विष्णु शिवर

ताक भिन्न बुद्धि करे जिये नर।

नामर सियो महा अपराधी,

नरकत परै दैवे नवाधि।"

यानी जो गुण-नाम में भेदभाव बरतता है। वह हरि नाम का अपराधी है। 'कीर्तनघोषा' में ही श्रीमंत शंकरदेव जी का एक पद दृष्टव्य है-

"जानिया सवे एरा भास-भूस।

भाग्ये से भारते भैला मानुष।"

श्रीमंत शंकरदेव जी ने माधव कंदली रचित असमिया रामायण के उत्तरकाण्ड की रचना की और महापुरुष माधवदेव जी ने आदिकांड की। माधव कंदली जी श्रीमंत शंकरदेव जी के गुरु थे। माधव कंदली जी की रामायण वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव जी द्वारा रचित बरगीतों से प्रेरणा लेकर श्रीराम आता, रामानंद द्विज, रामचरण ठाकुर, दैत्यारि ठाकुर आदि अनेक वैष्णव भक्तों और शिष्यों ने आध्यात्मिक गीतों की रचना की।

प्राग्ज्योतिषपुर के प्रायः सभी वनवासी समुदायों में राम, कृष्ण और अन्य सांस्कृतिक प्रतीकों की उपस्थिति को पढ़ा जा सकता है। असम की कार्बी-आबलांग जनजाति द्वारा रामकथा का साबिन आलून रामायण के रूप में गायन, खाम्ती जनजाति का खाम्ती रामायण, असमिया का माधव कन्दली रामायण, शंकरदेव, माधवदेव, बदला पद्माता की रचनात्मकता ऐसे ही चिह्न हैं जहाँ भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता को पढ़ सकते हैं। कार्बी आबलांग जनजाति में रामकथा के गायन की परंपरा है। कार्बी लोग मूलतः वनवासी हैं और ये मध्य असम में कार्बी आबलांग क्षेत्र में रहते हैं। इनके उद्भव के संदर्भ में जो भी तर्क हैं, वे ब्रह्मा, विष्णु, दुर्गा, इंद्र के प्रतीकों के इर्द-गिर्द हैं। इनके रीति-रिवाज भी सनातन परंपरा के अनुसार ही हैं। मृत्यु के उपरांत श्राद्ध की परंपरा है, जिसे चमांकान कहते हैं। ये तुलसी की पूजा करते हैं। इनके यहाँ रामकथा के गायन की वाचिक परंपरा रही है। इसे छाबिन आलुन रामायण कहा जाता है। पुरोहित उत्सवों के अवसर पर इस कथा का गायन करते रहे हैं।

चाहे वर्तमान की असम की कार्बी जनजाति हो या त्रिपुरा की जमातिया, इनका मूल्यबोध भक्ति आंदोलन के सूत्रों का मूल्यबोध है। राम और कृष्ण यहाँ भी नायक हैं। कृष्ण रास और राम का नायकत्व यहाँ भी प्रेरणा का कारण है। इसी प्रेरणा से भारतबोध पत्रिका का दूसरा अंक प्राग्ज्योतिषपुर के महान संत श्रीमंत शंकरदेव पर केंद्रित है। इस अंक में माननीय डॉ. कृष्णगोपाल जी, प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय, बापचन्द महंत, प्रो. दिनेश चौबे, डॉ. वीरेंद्र परमार सहित कई विद्वानों और शोधार्थियों के लेख शामिल हैं।

भारतबोध के प्रवेशांक को जो सम्मान प्राप्त हुआ, उससे आह्लादित हूँ। इसके दूसरे अंक का वैशिष्ट्य इसी बात में है कि मध्यकाल में 'सदा सर्वदा भारतवर्ष' की बात करने वाले श्रीमंत शंकरदेव जी की काव्य-संपदा, कला-वैभव, नृत्य, संगीत, मुखौटा कला, भाओना और अंकिया नाट से पाठकों का परिचय हो सके। श्रीमंत शंकरदेव जी पर केंद्रित भारतबोध का यह अंक विजय यादव, आदित्य मिश्रा जैसे शुभचिंतकों के परिश्रम का परिणाम है।

सभी का आभार।

सादर

आचार्य (डॉ.) चन्दन कुमार